चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	21.7.26	12	3-6

किसानों के लिए वरदान बना एचएयू का फ्रूट फ्लाई ट्रैप

मक्खी से बचेंगी फल-सब्जियों की फसलें

70 प्रतिशत तक नुकसान करने वाली फल मक्खी पर प्रभावी नियंत्रण का दावा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। एचएयू द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप। फल मक्खी, जिसके नियंत्रण के लिए ट्रैप बनाया गया है। फोटो : हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप फलदार फसलों और सब्जियों में भारी नुकसान पहुंचाने वाली फल मक्खी (फ्रूट फ्लाई) के नियंत्रण में बेहद प्रभावी साबित हो रहा है। वर्षा ऋतु में फल मक्खी का प्रकोप तेजी से बढ़ जाता है, जिससे अमरूद, किन्नू, नाशपाती, आड़, आलूबुखारा और आम जैसी फलदार फसलों में 70 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है, वहीं घीया, तोरी, खीरा, करेला, तरबूज, खरबूजा और कद्दू वर्गीय सब्जियां भी इसकी चपेट में आ जाती हैं। एचएयू के कीट विज्ञान विभाग द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप इस कीट के एकीकृत प्रबंधन का प्रभावी और वैज्ञानिक समाधान है। मादा फल मक्खी फलों की ऊपरी सतह के नीचे अंडे देती है, जिनसे निकलने वाले सफेद रंग के लार्वा फल के अंदर रहकर उसे सड़ा देते हैं। चूंकि कीट फल के भीतर रहता है, इसलिए सामान्य कीटनाशकों का प्रभाव सीमित रहता है। ऐसे में ट्रैप जैसी तकनीक अपनाकर इसके प्रजनन चक्र को रोकना अधिक कारगर साबित होता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने किसानों को सलाह दी कि संक्रमित फलों को प्रतिदिन अथवा एक दिन छोड़कर एकत्रित कर कम से कम दो फीट गहरे गड्ढे में दबा दें।

कीमत 130 रुपये प्रति ट्रैप निर्धारित

कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. सुनीता यादव का कहना है कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप की कीमत 130 रुपये प्रति ट्रैप निर्धारित की गई है। किसानों को प्रति एकड़ 12 से 14 ट्रैप लगाने की सिफारिश की गई है। ट्रैप में लगा आकर्षक पदार्थ (सैप्टा) लगभग 30 दिन तक प्रभावी रहता है, इसलिए 30 से 35 दिन बाद इसे दोबारा चार्ज करना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि किसान यह ट्रैप कीट विज्ञान विभाग, हकृवि से प्राप्त कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	21·7·26	4	7-8

हकृवि द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप फल मक्खी नियंत्रण में प्रभावी: प्रो. काम्बोज

ट्रैप का फोटो

हिसार, 20 जुलाई (ब्यूरो): फलदार फसलों एवं सब्जियों को फल मक्खी से भारी नुकसान होता है। फल मक्खी अमरूद, किन्नू, नाशपाती, आडू, आलूबुखारा तथा आम में 70 प्रतिशत तक नुकसान कर सकती है। सब्जी वर्गीय फसलों घीया, तोरी, खीरा, करेला, तरबूज, खरबूजा व कद्दू वर्गीय सब्जियों में भी बहुत नुकसान पहुंचाती है। वर्षा ऋतु में इसका प्रकोप और अधिक बढ़ जाता है, इसलिए किसानों को समय रहते इसके एकीकृत प्रबंधन के उपाय अपनाने चाहिए। हकृवि के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि कीट विज्ञान विभाग द्वारा फल मक्खी ट्रैप (फ्रूट फ्लाई ट्रैप) विकसित किया गया है जो इस कीट के प्रबंधन में प्रभावी है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि फल मक्खी के नियंत्रण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप प्रभावी तकनीक है। इसे संबंधित फसल में फल बनने की अवस्था से पहले खेत में लगाया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	20.07.2026	-----	----

हकृवि द्वारा विकसित फ्रुट फ्लाई ट्रैप फल मक्खी नियंत्रण में प्रभावी : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। (अभिनव शर्मा) फलदार फसलों एवं सब्जियों को फल मक्खी से भारी नुकसान होता है। फल मक्खी अमरूद, किन्नू, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा तथा आम में 70 प्रतिशत तक नुकसान कर सकती है। सब्जी वर्गीय फसलों घीया, तोरी, खीरा, करेला, तरबूज, खरबूजा व कद्दू वर्गीय सब्जियों में भी बहुत नुकसान पहुंचाती है। वर्षा ऋतु में इसका प्रकोप और अधिक बढ़ जाता है, इसलिए किसानों को समय रहते इसके एकीकृत प्रबंधन के उपाय अपनाने चाहिए। हकृवि के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि कीट विज्ञान विभाग द्वारा फल मक्खी ट्रैप (फ्रूट फ्लाई ट्रैप) विकसित किया गया है जो इस कीट के प्रबंधन में प्रभावी है। उन्होंने बताया कि मादा मक्खी फलों की ऊपरी सतह के नीचे अंडे देती है और अंडे देने वाली जगह पर गहरे रंग के दबे हुए धब्बे फल की सतह पर दिखाई देते हैं। अंडों से कुछ दिनों के बाद चावल के दाने जैसे आकार वाले सफेद रंग के कीड़े पनपते हैं जोकि फल को गला देते हैं। इस कीट की मादा फलों को ऊपरी सतह के नीचे अंडे देती है और शिशु

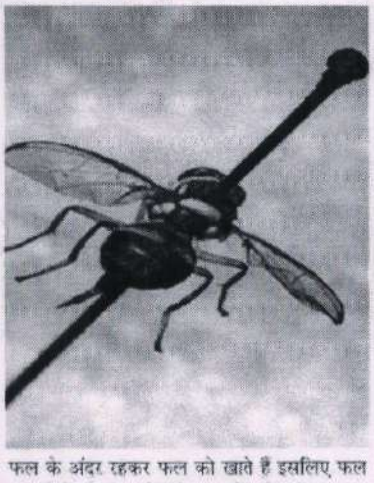

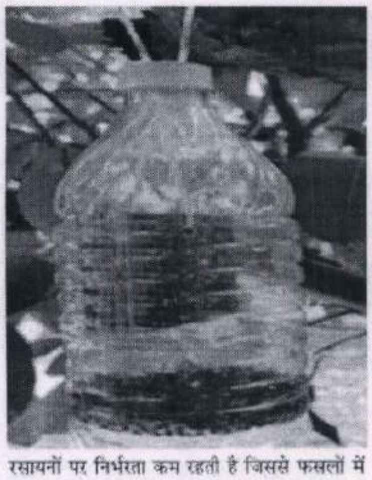

फल के अंदर रहकर फल को खाते हैं इसलिए फल मक्खी के नियंत्रण में कीटनाशकों की भूमिका कम असरदार होती है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर इसके प्रकोप को काफी कम किया जा सकता है। एकीकृत प्रबंधन अपनाने से रसायनों पर निर्भरता कम रहती है जिससे फसलों में रसायनों का अंश नहीं आता और फलों और सब्जियों की गुणवत्ता अच्छी रहती है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने किसानों को सलाह दी कि फल मक्खी से प्रभावित फलों को प्रतिदिन अथवा एक दिन छोड़कर एकत्रित कर दो फीट गहरे गड्ढे में दबा दें। गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करने से कीट की प्यूपा अवस्था नष्ट होती है और अगले मौसम में इसका प्रकोप कम होता है। उन्होंने बताया कि फल मक्खी के नियंत्रण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप प्रभावी तकनीक है। इसे संबंधित फसल में फल बनने की अवस्था से पहले खेत में लगाया जा सकता है। ट्रैप को पेड़ की ऐसी शाखा पर लगाना चाहिए, जहां सीधी धूप कम पड़ती हो। इससे नर फल मक्खियां ट्रैप में फंसकर नष्ट हो जाती हैं और उनकी प्रजनन क्षमता घटने से कीट की संख्या नियंत्रित रहती है। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. सुनीता यादव ने बताया कि इस ट्रैप की कीमत 130 रुपये प्रति ट्रैप है। विभाग द्वारा किसानों को प्रति एकड़ 12 से 14 ट्रैप प्रति एकड़ लगाने की सिफारिश की गई है। ट्रैप में मौजूद सैप्टा का असर लगभग 30 दिन तक प्रभावी रहता है। इसलिए 30 से 35 दिनों के बाद इसे दोबारा चार्ज करना जरूरी है। किसान भाइयों के लिए फल मक्खी ट्रैप, कीट विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में उपलब्ध है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	21·7·26	2	1-6

खेतीबाड़ी

एचएयू ने विकसित किया वैज्ञानिक ट्रैप, महज 1,500 से 2,000 रुपये प्रति एकड़ खर्च में मिलेगा प्रभावी नियंत्रण

बेअसर होगा मक्खी का वार, फ्रूट फ्लाई ट्रैप बनेगा फलों का पहरेदार

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। वर्षा ऋतु में फल मक्खी का प्रकोप बढ़ने से फलदार फसलों और कद्दूवर्गीय सब्जियों को नुकसान होता है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों का कहना है कि किसान बिना अधिक कीटनाशक इस्तेमाल किए महज 1,500 से 2,000 रुपये प्रति एकड़ की लागत में इस कीट पर प्रभावी नियंत्रण कर सकते हैं।

कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने बताया कि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग ने फ्रूट फ्लाई ट्रैप विकसित किया है जो फल मक्खी के प्रबंधन में कारगर साबित हुआ है। यह कीट अमरूद, किन्नू,

70 फीसदी तक नुकसान पहुंचा सकती है फल मक्खी

नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा, आम व घीया, तोरी, खीरा, करेला, तरबूज, खरबूजा और कद्दूवर्गीय सब्जियों में 70 प्रतिशत तक नुकसान पहुंचा सकता है।

उन्होंने बताया कि मादा फल मक्खी फलों की ऊपरी सतह के नीचे अंडे देती है। कुछ दिनों बाद इनसे निकलने वाले सफेद लार्वा फल के अंदर ही गूदा खाकर उसे सड़ा देते हैं। चूंकि कीट का अधिकांश जीवन फल के भीतर ही बीतता है इसलिए केवल कीटनाशकों से इसका प्रभावी नियंत्रण संभव नहीं है। ऐसे में एकीकृत कीट प्रबंधन और वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाना अधिक लाभकारी है।

एचएयू का फ्रूट फ्लाई ट्रैप। स्रोत : संस्थान

खेत की गहरी जुताई से होगा लाभ

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने किसानों को सलाह दी कि संक्रमित फलों को प्रतिदिन या एक दिन छोड़कर एकत्र कर कम से कम दो फीट गहरे गड्ढे में दबा दें। गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करने से कीट की प्यूपा अवस्था नष्ट हो जाती है जिससे अगले मौसम में इसका प्रकोप कम रहता है। उन्होंने बताया कि फल बनने से पहले खेत में फ्रूट फ्लाई ट्रैप लगाने चाहिए। इन्हें पेड़ की ऐसी शाखा पर टांगें, जहां सीधी धूप कम पड़ती हो। इससे नर फल मक्खियां ट्रैप में फंस जाती हैं और प्रजनन कम होने से कीट की संख्या नियंत्रित रहती है।

प्रति एकड़ 12 से 14 ट्रैप लगाने की सलाह

कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने बताया कि एक ट्रैप की कीमत 130 रुपये है। प्रति एकड़ 12 से 14 ट्रैप लगाने की सिफारिश की गई है। ट्रैप में प्रयुक्त ल्योर (सैप्टा) लगभग 30 दिन तक प्रभावी रहता है इसलिए 30-35 दिन बाद इसे दोबारा चार्ज करना आवश्यक है। फ्रूट फ्लाई ट्रैप कीट विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए किसान टोल फ्री नंबर 1800-180-3001, फोन 01662-255289 या 9729300525 पर संपर्क कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	21.07.2026	-----	----

हकृवि द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप फल मक्खी नियंत्रण में प्रभावी : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 21 जुलाई : फलदार फसलों एवं सब्जियों को फल मक्खी से भारी नुकसान होता है। फल मक्खी अमरूद, किन्नू, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा तथा आम में 70 प्रतिशत तक नुकसान कर सकती है। सब्जी वर्गीय फसलों घीया, तोरी, खीरा, करेला, तरबूज, खरबूजा व कद्दू वर्गीय सब्जियों में भी बहुत नुकसान पहुंचाती है। वर्षा ऋतु में इसका प्रकोप और अधिक बढ़ जाता है, इसलिए किसानों को समय रहते इसके एकीकृत प्रबंधन के उपाय अपनाने चाहिए।

हकृवि के कुलपति प्रो बलदेव राज काम्बोज ने बताया कि कीट विज्ञान विभाग द्वारा फल मक्खी ट्रैप (फ्रूट फ्लाई ट्रैप) विकसित किया गया है जो इस कीट के प्रबंधन में प्रभावी है। उन्होंने बताया कि मादा मक्खी फलों की ऊपरी सतह के नीचे अंडे देती है और अंडे देने वाली जगह पर गहरे रंग के दबे हुए धब्बे फल की सतह पर दिखाई देते हैं। अंडों से कुछ दिनों के बाद चावल के दाने जैसे आकार वाले सफेद रंग के कीड़े पनपते हैं जोकि फल को गला देते हैं। इस कीट की मादा फलों को ऊपरी सतह के नीचे अंडे देती है

और शिशु फल के अंदर रहकर फल को खाते हैं इसलिए फल मक्खी के नियंत्रण में कीटनाशकों की भूमिका कम असरदार होती है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर इसके प्रकोप को काफी कम किया जा सकता है। एकीकृत प्रबंधन अपनाने से रसायनों पर निर्भरता कम रहती है जिससे फसलों में रसायनों का अंश नहीं आता और फलों और सब्जियों की गुणवत्ता अच्छी रहती है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने किसानों को सलाह दी कि फल मक्खी से प्रभावित फलों को प्रतिदिन अथवा एक दिन छोड़कर एकत्रित कर दो फीट गहरे गड्ढे में दबा दें। गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करने से कीट की प्यूपा अवस्था नष्ट होती है और अगले मौसम में इसका प्रकोप कम होता है। उन्होंने बताया कि फल मक्खी के नियंत्रण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फ्रूट फ्लाई ट्रैप प्रभावी तकनीक है। इसे संबधित फसल में फल बनने की अवस्था से पहले खेत में लगाया जा सकता है। ट्रैप को पेड़ की ऐसी शाखा पर लगाना चाहिए, जहां सीधी धूप कम पड़ती हो। इससे नर फल मक्खियां ट्रैप में फंसकर नष्ट हो जाती हैं और उनकी प्रजनन क्षमता घटने से कीट की संख्या नियंत्रित रहती है। कीट विज्ञान विभाग की अध्यक्षा डॉ. सुनीता यादव ने बताया कि इस ट्रैप की कीमत 130 रुपये प्रति ट्रैप है। विभाग द्वारा किसानों को प्रति एकड़ 12 से 14 ट्रैप प्रति एकड़ लगाने की सिफारिश की गई है। ट्रैप में मौजुद सैप्टा का असर लगभग 30 दिन तक प्रभावी रहता है। इसलिए 30 से 35 दिनों के बाद इसे दोबारा चार्ज करना जरूरी है। किसान भाइयों के लिए फल मक्खी ट्रैप, कीट विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए 1800-180-3001 (टोल फ्री), 01662-255289 व 9729300525 पर संपर्क करें।